

Buāg. P. 2, 10, 45. तस्यानुविहितः 1, 9, 17. — Vgl. अनुविधातव्य, °धायिन्.  
— अभिवि 1) vollständig belegen: (अभिवि) चर्मणाभिविहितः Lāṭj. 3, 11, 2.  
— 2) in die unmittelbare Nähe von Etwas, zur Berührung mit Etwas stellen, bringen: न भूमिपाशमभिविदध्यात् Çat. Br. 13, 8, 1, 16. — Vgl. अभिविधि.

— प्रवि 1) abtheilen: प्रविधाय च तद्वर्तियोजयेच्छाञ्जने भिषक् Suçr. 2, 347, 7. — 2) auf Etwas bedacht sein: अनागतविधानं च तस्यार्थे प्रविधीयताम् R. 4, 14, 29. सद्यः मुखैः स मन्त्रिभिः — प्रविद्धे Rāga-Tar. 3, 421. viell. Jmd alle mögliche Aufmerksamkeit bezeigen (vorstellen): ततस्तो लक्ष्मीं प्रविधाय प्रदोषे स्वगृहे निनाय Çuk. 44, 14, 15. LASSEN: rem persuasam reddere alii.

— प्रतिवि 1) ordnen, zurecht —, bereit machen: चतुर्विधवला चमूः । राघवस्यानुयात्रार्थं निप्रं प्रतिविधीयताम् R. 2, 36, 2. — 2) abordnen (vgl. वि 11): निप्रमस्मिन्प्रव्यात्र चारः प्रतिविधीयताम् R. 5, 90, 14. — 3) entgegenarbeiten: निप्रमेव कामात्र प्रतिविहितमार्गेण । न पारितं प्रतिविधातुम् Mudrān. 70, 17, 18. — Vgl. प्रतिविधातव्य, °धान, °धि, °धेय.

— संवि 1) anordnen, bestimmen, festsetzen: भवद्भिर्गदनुष्ठेयं तच्छीघ्रं संविधीयताम् MBu. 3, 8806. संविधाय पुरे रत्नाम् 12089. यद्वानन्तरं कार्यम् — संविधत्स्व विधानज्ञ R. 1, 38, 4. वृत्तिं नः संविधत्स्व वै Suçr. 2, 394, 17. येयामां च पक्वं च संविधते MBu. 2, 1900. वैरस्यात्तं संविधाय MBu. 3, 13703. Einschalt. nach Megh. 113. Jmd beordern: संविधाय कुरिर्नम् । नखेशेन भैमानां प्रेषयामास Hariv. 8663. — 2) betreiben, Sorge für Etwas tragen, sich eine Sache angelegen sein lassen: संविधास्यति कार्याणि सर्वया R. 4, 23, 5. असंविक्तिराष्ट्र MBu. 12, 4730. विश्वमूतः सन्नं सहस्रपरिवत्सरान् । संविधाय Buāg. P. 4, 2, 34. श्रुता तत्तः शुभे वाक्यं संविधास्याम्यहे तथा MBu. 3, 7430. यथैनं नाभिसंदध्युः — तथा सर्वं संविदध्यात् M. 7, 180. अयमशो यथा ब्रह्मनुत्सृष्टः पृथिवीमिमाम् । चरिष्यति यथाकामं तत्र वै संविधीयताम् MBu. 14, 2095. Ragu. 1, 72. संविधाय यथादृष्टं यथादेशप्रदर्शनम् MBu. 4, 866. विदितं वाय वाज्ञातं पितुर्मे संविधीयताम् so v. a. man nehme sich meiner Sache an 3, 2954. R. 2, 91, 12, 13. संविधायिप्रक्षानासनसंश्रयद्विधोभावाननिकतमेन संविधास्ये mit einem dieser Mittel werde ich verfahren Pañkat. 12, 21. — 3) gebrauchen, anwenden: सुसंविधाय स्ववत्तं सदृशं विक्रमस्य R. 5, 70, 6. — 4) aufstellen, auslegen: तत्र स्नायुमान्याशाशान्यवाचसंविधाय MBu. 12, 4936. setzen auf: पुत्रं दामोदरोत्सङ्गं देवी संव्यदधातस्वयम् 2, 1510. — 5) मानसम् den Geist in Ordnung erhalten so v. a. gutes Muthes bleiben Bhāṭṭr. 1, 66. — Vgl. संविधा fgg.

— अत् s. u. d. W.

— सम् 1) zusammensetzen (zusammenreihen, — knüpfen, — nähern u. s. w.), vereinigen, verbinden; herstellen, wiederherstellen: कृत्स्नं च वर्षामरूणं च सं धुः RV. 1, 73, 7. यथा नकुला विच्छिद्यं संधात्यर्हं पुनः AV. 6, 139, 5. 10, 1, 8. 11, 8, 14. क्विन्म् VS. 8, 61. अरिष्टं यत्तं समिधं दधातु 2, 13. यत्तस्य विरिष्टं संधाति Kuānd. Up. 4, 17, 4. fgg. VS. 11, 39. 19, 93. सं वञ्चं पर्वशो दधुः RV. 8, 7, 22. यथा सूच्या त्रासः संधादिपात् Ait. Br. 3, 18. सं वरत्रा दधातन (P. 7, 1, 45, Schol.) RV. 10, 101, 5. अर्धर्चान् TS. 2, 3, 3, 5. 4, 7, 4, 5. तत्पर्वभिषज्यस्तत्समदधुः Çat. Br. 1, 6, 3, 36. 7, 3, 22. शीर्षकपालम् 7, 3, 3, 26. तद्यथा लघणेन सुवर्णं संदध्यात् सुवर्णेन रजतम् Kuānd. Up. 4, 17, 7. तावत्त्येव सहस्राणि पलानां रजतस्य च । संधाय शु-

द्धीश्वक्रे श्रीपरीकुसकेशवम् ॥ Rāga-Tar. 4, 202. Hariv. 12020. गायत्रेण पादेन पाङ्क्तं पादम् Çāṅkh. Çr. 9, 5, 6. 10, 7, 2. 18, 1, 14. पदान्तात्पदादिभिः संधेदिति RV. Prāt. 2, 1. 3, 15. 15, 4. VS. Prāt. 4, 180. संहित 1, 147. 155. 5, 8. संहितोर्त्वे P. 4, 1, 70. मुखेन मुखं संधाय Mund an Mund legend Çat. Br. 14, 9, 4, 9. संधुः कस्य कायेन सवनीयपशोः शिरः Buāg. P. 4, 7, 8. संधीयमाने शिरसि 9. Rāga-Tar. 2, 102. यानि तु पुष्पमूलपालैरुदकेन संधीयते तानि च भक्षणीयानि Kull. zu M. 3, 10. schliessen (die Augen): तेषां सं दध्मे (कुन्मो RV.) अन्तीणि यथेदं कुर्यं तत्रा AV. 4, 5, 5. med.: व्रणं कपायः संधते zusammenziehen, schliessen Suçr. 1, 47, 7. इन्द्रियाणीन्द्रियायाश्च महामूतानि पञ्च च) सर्वाण्येतानि संधाय मनसा संप्रधारयेत् zusammenfassen MBu. 14, 1148. ततः संधाय ते सर्वे वाक्यान्यथ समासतः । एकस्मिन्ब्राह्मणे — निवेश्याचुः 13, 314 (vgl. 12, 1418). zusammensetzen so v. a. abfassen, componere: लेखिष्याप्यात्मसंहितैः Kām. Nitis. 9, 68. संधे मनः fasste den Geist zusammen, sammelte sich Buāg. P. 9, 9, 42; vgl. समाधिं संधे bei Westr. (mit falschem Citat). pass. sich vereinigen: एवातः समधीयत संहिताः प्ररुदन्ति च Hariv. 12213. verbunden werden mit, in Besitz kommen von: संधीयते प्रजया पशुभिः Ait. Br. 3, 7. Taitt. Up. 1, 3, 4. संहित am Ende eines comp. verbunden mit, in Verbindung stehend mit. begleitet von, versehen mit: पुत्रयष्टु MBu. 12, 207. एष स्त्रीयुमयोक्तो धर्मो वो रतिसंहितः M. 9, 103. जितेयुं मन्त्रसंहितम् R. 1, 32, 19. एवं निष्पलमारब्धं केवलानर्थसंहितम् Daç. 1, 28. R. Gorr. 2, 12, 26. काञ्चीनिन्दं नूपुरस्वनसंहितम् 5, 10, 12. वाचं पितुर्मरणसंहिताम् so v. a. den Tod des Vaters betreffend 2, 103, 1. वाचः — रामाभिष्टवसंहिताः R. Gorr. 2, 12, 26. हंसकाकीयमाख्यां तथैवात्तेपसंहितम् MBu. 1, 543. R. 2, 81, 1. प्रतिज्ञा धर्मसंहिताम् so v. a. übereinstimmend mit MBu. 1, 472. वचनं धर्मसंहितम् R. 2, 21, 29. 39, 26. 3, 14, 1. 4, 16, 15. 5, 69, 15. 6, 98, 32. 104, 2. 112, 52. विनाशं कर्मसंहितम् in Verbindung stehend mit so v. a. hervorggerufen durch MBu. 14, 527. — 2) niederlegen in, — bei; zusammen verleihen, vereinigen auf (loc.); act. med.: ब्रह्मा च गिरौ दधिरे समस्मिन् RV. 6, 38, 3. सं सौभागानि दधिरे पावके 5, 2. मायास्त्वे सं दधुः 3, 20, 3. 1, 9, 7. 10, 140, 3. सं पुंसो वृत्त्यमस्मिन्धैक् AV. 4, 4, 4. zusammenlegen auf: यज्ञलिं मूर्ध्नि संधाय MBu. 3, 2340. शरं (सायके u. s. w.) धनुषि, कार्मुके, चापे (welche auch fehlen können) den Pfeil auf den Bogen legen: मानवास्त्रं च चापे संधाय R. 1, 32, 16. 3, 26, 20. 50, 16. 72, 14. MBu. 13, 1607. Pañkat. 84, 19. महेषुम् — संधे कार्मुके, तस्मिन्संधीयमाने 6, 92, 52, 53. Ragu. 3, 53. 11, 28. MBu. 1, 5280. 5479. 3, 768. 4, 1891. 6, 3242. 14, 2458. Çāṅ. 94, 10, 13. Buāg. P. 1, 7, 20. 4, 11, 1, 2. Mār. 43, 74. अमोघं संधे चास्मै (gegen ihn gerichtet) धनुषि — अस्त्रम् Ragu. 12, 97. Buāg. P. 1, 7, 20. संधान = संधान MBu. 4, 1961. ganz ausnahmsweise act.: न गृह्णतोः शरान्वारात्र च संधतोस्तयोः Hariv. 13801. Seltener ist die Verbindung धनुर्वाणेन den Bogen mit dem Pfeil verbinden: यदि संधास्यसीदं त्वं वाणेनानेन कार्मुकम् R. Gorr. 1, 77, 5. 4. auch mit Weglassung des Pfeils: न शक्यं सहसा वोढुं कुतः संधातमोत्रसा 3, 4, 27. mit dem instr. des Geschosses viell. so v. a. zielen: सं विद्युता दधति (मरुतः RV. 5, 54, 2; Sū. : संगच्छते richten (das Auge) auf: ततः (dahin) संधे दृशमुदग्रतारकाम् Ragu. 11, 69. — 3) schliessen (einen Bund): यथा यथा मित्रार्थितानि संधुः RV. 10, 100, 4. zusammenführen, aussöhnen: हूत एव हि संधते भिनत्येव च संकृतान् M. 7, 66. संधेयानपि संधत्स्व विरोध्याश्च विरोधय MBu. 12, 2050. संधाय तान्